

अनाश्य वि. (तत्.) [(न)=अ+नाश्य] 1. जिसका किसी तरह से नाश संभव न हो। 2. जो नाश करने योग्य न हो, अविनाश्य विलो. नाश्य।

अनाश्रमी वि. (तत्.) 1. जो अब किसी आश्रम में न रहता हो, या जिसने आश्रम छोड़ दिया हो। 2. जो ब्रह्मचर्यादि चतुर आश्रम व्यवस्था को न मानता हो 3. बिना आश्रमवाला/आश्रमरहित। विलो. आश्रमी।

अनाश्रय वि. (तत्.) निराश्रय, बेसहारा, अनाथ; दीन। पुं. (तत्.) आश्रय-रहित होने की स्थिति।

अनाश्रित वि. (तत्.) आश्रय-रहित, बेसहारा।

अनास वि. (तत्.) [अ+नासा] 1. जो नाक से रहित हो, बिना नाक का उदा. लक्ष्मण ने शूर्पनखा को अनास कर दिया था 2. लाक्ष. जिसने लोकनिन्द्य कर्मों या आचरण से स्वयं व कुल को अपमानित किया हो, नकटा।

अनासक्त स्त्री. (तत्.) जो आसक्त न हो, जो अनुरक्त या लिप्त न हो।

अनासक्ति स्त्री. [अन्+आसक्ति] 1. किसी वस्तु विशेष पर किसी प्रकार का लगाव या अनुरक्ति न होना। 2. दर्श. सांसारिक भोगों के प्रति निर्लिप्तता 3. उदासीनता।

अनासिक वि. (तत्.) [अ+नासिका] 1. जो बिना नाक का हो 2. जिसकी नाक काट ली गई हो या 3. किसी कारण से नष्ट हो गई हो 3. नकटा।

अनासीन वि. (तत्.) [अन्+आसीन] 1. जो अपने स्थान पर बैठा हुआ न हो। 2. किसी व्यक्ति या अधिकारी का अपने आसन पर आसीन न होना। जैसे- अनासीन न्यायाधीश। 3. जो अपने पद में आसीन न हो या जिसे उसके पद या सत्ता से मुक्त कर दिया गया हो विलो. आसीन जैसे- पदासीन।

अनास्थ वि. (तत्.) [अन्+आस्था] जो किसी व्यक्ति, वस्तु, धर्म विशेष या आस्था/विश्वास न रखता हो, आस्थारहित।

अनास्था स्त्री. (तत्.) 1. आस्था, श्रद्धा या विश्वास का अभाव 2. अनादर, अवज्ञा 3. उदासीनता।

अनास्थावाद पुं. (तत्.) एक दार्शनिक मत जिसके अनुसार किसी व्यक्ति, वाद, शास्त्र, धर्म आदि पर आस्था न रखने की बात हो।

अनास्रव वि. (तत्.) [अन.+आस्रव] 1. जिसका बहाव न हो या जिसका बहाव रोका गया हो 2. दर्श. जिसके मनन, चिंतन व धारण से संसार में जन्म और मृत्यु का प्रवाह रुकता हो जैसे- अस्रव-ज्ञानयोग/सांययोग आदि।

अनास्वाद वि. (तत्.) स्वादरहित, विरस पुं. (तत्.) स्वाद का अभाव, विरसता, नीरसता।

अनास्वादित वि. (तत्.) जिसका स्वाद न लिया गया हो, जिसे चखा न गया हो।

अनाहत वि. (तत्.) 1. जो आहत नहीं हुआ हो, जिस पर आघात न हुआ हो 2. अक्षुब्ध 3. अगणित, जिसका गुणन न किया गया हो पुं. 1. नया कपड़ा जो अभी पहना न गया हो। 2. अनहद नाद 3. हृदय-स्थित द्वादशदल कमल पुं. (तत्.) दे. अनहित चक्र।

अनाहत चक्र पुं. (तत्.) हठयोग के छह चक्रों में से एक, जिसका स्थान हृदय माना जाता है।

अनाहत ध्वनि स्त्री (तत्.) दे. आनहद नाद।

अनाहत नाद पुं. (तत्.) दे. अनाहद नाद।

अनाहद वाणी स्त्री. (तत्.) देववाणी, आकाशवाणी।

अनाहद शब्द पुं. (तत्.) 1. दे. अनाहद नाद।

अनाहार पुं. (तत्.) भोजन का अभाव या भोजन-त्याग, अनशन वि. (तत्.) निराहार, जिसने कुछ न खाया हो।

अनाहारी वि. (तत्.) 1. आहार न लेनेवाला निराहारी 2. उपवास या अनशन करने वाला।

अनाहार्य वि. (तत्.) 1. जो लेने या ग्रहण करने योग्य न हो 2. जो खाने योग्य न हो।

अनाहिताग्नि वि. (तत्.) [अन.+आहिताग्नि] 1. वह अग्नि जो घर में किसी गृहस्थ के द्वारा वैदिक जीवन पद्धति के अनुसार विधिवत स्थापित न की गई हो 2. घर में विधिवत अग्निहोत्र (यज्ञ) न करने वाला।